Sajde Ke Fazaail (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 416
Weekly Booklet : 416

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब ''फ़ैज़ाने नमाज़''
से एक क़िस्त बनाम

सज्दे के फ़ज़ाइल

सफ़हात : 23

मग़्फ़िरत का नुस्ख़ा 01
सज्दए शुक्र का तरीक़ा 16
गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत 18
दिल का नूर और चेहरे की चमक 21

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल
मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

مکتبۃ المدینہ ہند
MAKTABATUL MADINA INDIA

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले नीचे दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ الله जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** पाक ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (مُسْتَطْرَف ج ١ ص ٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आखि़र एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़ व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)

येह रिसाला "**सज्दे के फ़ज़ाइल**"

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक्तबतुल मदीना** से शाएअ़ करवाया है । इस रिसाले में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़लत़ी पाएं तो ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट को (ब ज़रीअ़ए WhatsApp, Email या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : ट्रान्सलेशन डिपार्टमेन्ट (दावते इस्लामी इन्डिया)
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अह़मदआबाद-1, गुजरात ।
MO. 98987 32611 E-mail : hind.printing92@gmail.com

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی خَاتَمِ النَّبِیّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْم ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْم ط

सज्दे के फ़ज़ाइल[1]

दुआए अ़त्तार : या रब्बल मुस्त़फ़ा ! जो कोई 22 सफ़ह़ात का रिसाला "**सज्दे के फ़ज़ाइल**" पढ़ या सुन ले उसे सज्दों की लज़्ज़तें इनायत फ़रमा और उसे मां बाप और खान्दान समेत बे ह़िसाब बख़्श दे । امین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللہُ علیہ والہٖ وسلّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** नमाज़ के बा'द ह़म्दो सना व दुरूद शरीफ़ पढ़ने वाले से **सरकारे मदीना** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : दुआ मांग क़बूल की जाएगी, सुवाल कर, दिया जाएगा ।

(نسائی، ص220، حدیث:1281)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

मग़्फ़िरत का नुस्ख़ा

ह़ज़रते अबू सईद खुदरी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ फ़रमाते हैं : "जो बन्दा ह़ालते सज्दा में तीन मरतबा येह कहे : [2]"یَا رَبِّ اغْفِرْلِیْ، یَا رَبِّ اغْفِرْلِیْ، یَا رَبِّ اغْفِرْلِیْ" जब वोह अपना सर उठाएगा तो उस की मग़्फ़िरत या'नी बख़्शिश हो चुकी होगी । (مصنف ابن ابی شیبہ، 7/33، حدیث:3) (येह दुआ नफ़्ल नमाज़ के सज्दों में पढ़िये या नफ़्ल के इलावा **अल्लाह** पाक की ने'मतों पर सज्दए शुक्र की निय्यत से सज्दा करें और उस में येह और जो चाहें जाइज़ दुआएं मांगें)

1... येह मज़्मून अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की किताब "फ़ैज़ाने नमाज़" सफ़ह़ा 255 ता 264, 268 ता 270 और 273 ता 279 से लिया गया है ।

2... **तरजमा :** ऐ परवर्दगार ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ परवर्दगार ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा, ऐ परवर्दगार ! मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा ।

या ख़ुदा मेरी मग़्फ़िरत फ़रमा बाग़े फ़िरदौस मर्हमत फ़रमा

(वसाइले बख़्शिश, स. 75)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

सज्दे में बहुत दुआ़एं मांगो

रह़मते आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "बन्दा **सज्दे** की ह़ालत में अपने रब्बे करीम से बहुत ज़ियादा क़रीब होता है, इस लिये तुम **सज्दे** में ब कसरत (या'नी ज़ियादा) दुआ़ किया करो ।"

(مسلم،ص198،حديث:1083)

शर्हे़ ह़दीस : ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : रब्बे करीम तो हम से हर वक़्त क़रीब है (मगर) हम उस से दूर रहते हैं, अलबत्ता **सज्दे** की ह़ालत में हमें उस से ख़ुसूसी क़ुर्ब (या'नी ख़ास क़रीब होना) नसीब होता है, लिहाज़ा इस क़ुर्ब (या'नी नज़्दीकी) को ग़नीमत समझ कर जो मांग सकें मांग लें । (मिरआतुल मनाजीह़, 2/82)

सज्दए शुक्र के लिये वुज़ू लाज़िमी है

सज्दए शुक्र में वुज़ू लाज़िम है और बिग़ैर सज्दए शुक्र के आ़दतन जो सज्दा किया जाता है उस के लिये वुज़ू ज़रूरी नहीं क्यूं कि येह शरई सज्दा नहीं, मह़ज़ एक मुबाह़ अ़मल है न सवाब न गुनाह । नमाज़ के इ़लावा सज्दों में दुआ़ मांगनी हो तो अ़रबी के इ़लावा दीगर ज़बानों में भी मांग सकते हैं ।

दौराने सज्दा दुआ़ में कोशिश करो

सह़ाबी इब्ने सह़ाबी ह़ज़रते अ़ब्दुल्लाह इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰهُ عَنْهُمَا से रिवायत है कि सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान

है : "मुझे रुकूअ़ व सज्दे में तिलावते क़ुरआन से मन्अ़ किया गया है, रुकूअ़ में तो रब की ता'ज़ीम करो और सज्दे में दुआ़ में कोशिश करो कि वोह दुआ़एं क़बूलिय्यत के लाइक़ हैं।" (مسلم ص١٩٦ حديث ١٠٧٤)

हज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक की शर्ह़ में लिखते हैं : नफ़्ल नमाज़ के सज्दों में सराह़तन (या'नी साफ़ लफ़्ज़ों में) दुआ़एं मांगो और दीगर नमाज़ों के सज्दों में रब्बे करीम की तस्बीह़ व तह़मीद (या'नी पाकी व ख़ूबी बयान) करो कि येह भी ज़िम्नी दुआ़ है, (या'नी एक त़रह़ से दुआ़ ही है क्यूं कि) करीम की ता'रीफ़ भी दुआ़ होती है। बा'ज़ बुज़ुर्गों को देखा गया कि वोह सज्दे में गिर कर दुआ़एं मांगते हैं उन का माख़ज़ (या'नी बुन्याद) येह ह़दीस है क्यूं कि सज्दे में बन्दे को रब्बे करीम से इन्तिहाई क़ुर्ब होता (या'नी बहुत नज़्दीकी ह़ासिल होती) है, इस ह़ालत की दुआ़ اِنْ شَآءَاللّٰه ज़रूर क़बूल होगी। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/71)

सज्दे में क़बूलिय्यते दुआ़ की बहुत उम्मीद है

वालिदे आ'ला ह़ज़रत, मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه की "**फ़ज़ाइले दुआ़**" में दुआ़ की क़बूलिय्यत के 45 अवक़ात व ह़ालात में से 20 नम्बर है : सज्दे में। (दुआ़ क़बूल होने की क़वी या'नी मज़बूत उम्मीद है) (फ़ज़ाइले दुआ़, स. 121)

दुआ़ की तौफ़ीक़ मिलना सज्दए शुक्र का मौक़अ़ है

"**फ़ज़ाइले दुआ़**" के सफ़ह़ा 62 पर **आ'ला ह़ज़रत**, इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه के दिये हुए इर्शाद का ख़ुलासा है : **अल्लाह** पाक की बारगाह में दुआ़ व इल्तिजा करने की तौफ़ीक़ मिलने पर **सज्दए शुक्र** की निय्यत से **सज्दा** करे कि बन्दा सज्दे में अपने रब्बे करीम के सब

से ज़ियादा क़रीब होता है, **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बन्दा **सज्दे** की ह़ालत में अपने रब्बे करीम से बहुत ज़ियादा क़रीब होता है, इस लिये तुम **सज्दे** में दुआ ज़ियादा मांगो। (مسلم ص ۱۹۸ حدیث ۱۰۸۳)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

पैदा होते ही सज्दा किया

ह़ज़रते मौलाना नक़ी अ़ली ख़ान رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ नक़्ल फ़रमाते हैं : उस (या'नी विलादत के) वक़्त आप (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ने जनाबे इलाही में **सज्दा** किया और कहा : رَبِّ ھَبْ لِیْ اُمَّتِیْ (तरजमा :) "ख़ुदाया ! मेरी उम्मत को मेरे वासित़े बख़्श दे। (या'नी मेरी उम्मत मुझे दे दे)" ख़ित़ाब हुवा (या'नी कहा गया) : وَھَبْتُکَ اُمَّتَکَ بِاَعْلٰی ھِمَّتِکَ (तरजमा :) "मैं ने तेरी उम्मत को ब सबब तेरी बुलन्द हिम्मत के बख़्श (या'नी तुझे दे) दिया।" फिर फ़िरिश्तों से इर्शादे (इलाही) हुवा : "ऐ मेरे फ़िरिश्तो ! गवाह रहो कि मेरा ह़बीब अपनी उम्मत को पैदा होने के वक़्त न भूला तो उस को क़ियामत के दिन किस त़रह़ भूलेगा !" (अन्वारे जमाले मुस्त़फ़ा, स. 104)

رَبِّ ھَبْ لِیْ اُمَّتِیْ, कहते हुए पैदा हुए   ह़क़ ने फ़रमाया कि बख़्शा, اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلام

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللہُ علٰی مُحَمَّد

स्टाम की तह़रीर (फ़र्ज़ी वाक़िआ़)

एक नेक बन्दे से किसी ने अपनी परेशानियों का रोना रोते हुए कहा : जो काम करता हूं वोह उलटा हो जाता है, क्या करूं ! उन्हों ने पूछा : स्टाम (Stamp) देखी है ? बोला : देखी है। पूछा : क्या येह जानते हो कि स्टाम (Stamp) पर लिखाई कैसे होती है... ? कहने लगा : उस पर उलटी लिखाई होती है। फ़रमाया : क्या येह बता सकते हो वोह सीधी कैसे होती

है ? जवाब दिया : जब स्टाम (Stamp) काग़ज़ पर लगती है तो अल्फ़ाज़ सीधे हो जाते हैं। फ़रमाया : जिस त़रह़ स्टाम (Stamp) अपना माथा (या'नी पेशानी) काग़ज़ पर टेकती है तो उस के उलटे अल्फ़ाज़ सीधे हो जाते हैं, इसी त़रह़ तू भी वुज़ू कर के मस्जिद जा और अपने ख़ालिक़ो मालिक के हुज़ूर माथा टेक (या'नी सज्दा कर) اِنْ شَآءَاللّٰہ तेरे भी उलटे काम सीधे हो जाएंगे।

"सज्दा" के चार हुरूफ़ की निस्बत से सज्दे में दुआ क़बूल होने के चार वाक़िआत

《1》 ह़ज़रते सुलैमान और एक किसान

ह़ज़रते अबू अ़ब्दुर्रह़मान दिमश्क़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ बयान करते हैं कि ह़ज़रते मक्हूल दिमश्क़ी رَحْمَۃُاللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : (**अल्लाह** पाक के प्यारे नबी) ह़ज़रते सुलैमान बिन दावूद عَلَیْہِ السَّلَام बालों से बुनी हुई एक चटाई पर तशरीफ़ फ़रमा थे और उन के अस्ह़ाब उन के गिर्द बैठे थे। आप ने हवा को हुक्म दिया तो उस ने चटाई को ऊपर उठा लिया, जिन्नात व इन्सान आप के सामने चलने लगे, परिन्दों ने साया कर दिया। एक किसान (Farmer) खेत में काम कर रहा था। उस ने दिल में कहा : अगर ह़ज़रते सुलैमान عَلَیْہِ السَّلَام मेरे सामने होते तो मैं उन से तीन बातें करता। **अल्लाह** पाक ने आप की त़रफ़ वह़ी फ़रमाई कि किसान के पास जाइये। आप घोड़े पर सुवार हो कर उस के पास तशरीफ़ ले गए और फ़रमाया : ऐ किसान ! मैं **सुलैमान** हूं, तुम जो पूछना चाहते हो पूछो ! किसान अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : आप को मेरे दिल के इरादे का इ़ल्म कैसे हुवा ? इर्शाद फ़रमाया : **अल्लाह** करीम ने मुझे इस का इ़ल्म अ़ता फ़रमाया। किसान ने अ़र्ज़ की : मैं ने इस इ़ल्म

पर यक़ीन किया। (पहली बात येह है :) ख़ुदा की क़सम ! जब मैं ने आप को ने'मतों में देखा तो ख़ुद से कहने लगा कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام की गुज़श्ता (या'नी गुज़री हुई) लज़्ज़तें और ने'मतें ख़त्म हो जाती हैं जब कि मैं जिस मेह़नत और थकन में कल था आज भी वैसा ही हूं, मगर आप عَلَيْهِ السَّلَام भी गुज़री हुई लज़्ज़त दोबारा मह़सूस नहीं करते हैं और मैं भी गुज़री हुई तक्लीफ़ दोबारा मह़सूस नहीं करता। ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने दूसरी बात पूछी तो उस ने अ़र्ज़ किया : मैं ने ख़ुद से येह कहा कि ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام भी इस दुन्या में हमेशा नहीं रहेंगे और मुझे भी मर जाना है। इर्शाद फ़रमाया : तुम ने सच कहा : किसान अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : तीसरी बात मैं ने फ़क़त़ ख़ुद को ख़ुश करने के लिये कही थी कि बरोज़े क़ियामत ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام से इन ने'मतों के मुतअ़ल्लिक़ पूछा जाएगा, मुझ से सुवाल नहीं होगा। येह सुन कर ह़ज़रते सुलैमान عَلَيْهِ السَّلَام ने घोड़े से उतर कर **सज्दा** किया और रोते हुए बारगाहे इलाही में अ़र्ज़ की : ऐ मेरे रब ! अगर तू जवाद (या'नी सब से बड़ा जूदो करम वाला) और बुख़्ल से पाक न होता तो मैं ज़रूर तुझ से इन ने'मतों के वापस लेने का सुवाल करता। (या'नी अ़र्ज़ करता कि अपनी ने'मतें वापस ले ले) **अल्लाह** पाक ने वह़ी फ़रमाई : ऐ सुलैमान ! (सज्दे से) अपना सर उठा लो ! क्यूं कि अपने बन्दे से राज़ी हो कर जो ने'मत उसे अ़त़ा करता हूं उस का ह़िसाब नहीं लूंगा।

(حلیۃ الاولیاء، 5/207، رقم:6853, अल्लाह वालों की बातें, 5/236)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

तू बे ह़िसाब बख़्श कि हैं बे शुमार जुर्म   देता हूं वासित़ा तुझे शाहे ह़िजाज़ का

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

﴾2﴿ सज्दे में दुआ़ के बा'द रिहाई नसीब हो गई

ह़ज़रते जा'फ़र ख़ुल्दी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से मन्क़ूल है कि मैं ने ह़ज़रते ख़ैरुन्नस्साज رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه से पूछा कि आप ख़ैरुन्नस्साज के नाम से कैसे मश्हूर हुए ? क्या नस्साज थे ? या'नी कपड़ा बुनने का काम करते थे ? फ़रमाया कि नहीं, बल्कि इस की वज्ह येह है कि मैं ने **अल्लाह** करीम से अ़ह्द कर रखा था कि कभी भी अपने नफ़्स की ख़्वाहिश पर ताज़ा खजूर नहीं खाऊंगा और काफ़ी अ़र्से तक मैं अपने अ़ह्द पर क़ाइम रहा। एक मरतबा नफ़्स के हाथों मजबूर हो कर मैं ने कुछ खजूरें ख़रीदीं और खाने के लिये बैठ गया, अभी एक खजूर ही खाई थी कि एक शख़्स मेरी त़रफ़ ग़ुस्से भरी नज़रों से देखने लगा। फिर वोह मेरे पास आया और कहा : ऐ ख़ैर ! तू तो मेरा भागा हुवा ग़ुलाम है ! दर अस्ल उस शख़्स का एक "ख़ैर" नामी ग़ुलाम था जो भाग गया था और उस शख़्स ने ग़लत़ फ़हमी की वज्ह से मुझे अपना ग़ुलाम समझ लिया था ! और अगर सच पूछो तो मेरी रंगत भी उस के ग़ुलाम जैसी हो गई थी। बहुत सारे लोग जम्अ़ हो गए। जैसे ही उन्हों ने मुझे देखा तो सभी एक दम बोल उठे : **अल्लाह** पाक की क़सम ! येह तो तेरा ग़ुलाम "ख़ैर" है। मैं अच्छी त़रह़ समझ गया कि मुझे किस जुर्म की सज़ा मिल रही है ! वोह शख़्स मुझे अपना ग़ुलाम समझ कर दुकान पर ले गया। वहां उस के और भी ग़ुलाम मौजूद थे जो कपड़े बुनते (या'नी धागों से कपड़े तय्यार कर रहे) थे। मुझे देख कर दूसरे ग़ुलाम कहने लगे : ऐ बुरे ग़ुलाम ! तू अपने आक़ा से भागता है ? चल ! यहां आ ! और अपना वोह काम कर जो तू किया करता था। फिर मालिक ने मुझे हुक्म दिया कि जाओ और फ़ुलां कपड़ा बुनो (या'नी धागों से तय्यार करो !)। जैसे ही मैं कपड़ा बुनने लगा तो ऐसा मह़सूस हुवा जैसे मैं बहुत माहिर कारीगर हूं और कई

सालों से येह काम कर रहा हूं। चुनान्चे मैं दूसरे गुलामों के साथ मिल कर काम करने लगा। वहां काम करते हुए जब कई महीने गुज़र गए तो एक रात मैं ने ख़ूब **नवाफ़िल** पढ़े और सारी रात इबादत में गुज़ारी, फिर **सज्दे** में गिर कर येह दुआ की : "ऐ मेरे पाक परवर्दगार ! मुझे मुआफ़ फ़रमा दे, मैं अब कभी भी अपने अ़हद से न फिरूंगा।" मैं इसी त़रह़ दुआ करता रहा, जब सुब्ह़ हुई तो देखा कि मैं अपनी अस्ली सूरत में आ चुका हूं, चुनान्चे मुझे छोड़ दिया गया। इस वज्ह से मेरा नाम ख़ैरुन्नस्साज या'नी "कपड़े बुनने वाला **ख़ैर**" पड़ गया। (عیون الحکایات، ص229, उ़यूनुल ह़िकायात (उर्दू), 2/ 46)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो । امین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

चाहते हो तुम दुआ़ अल्लाह फ़रमाए क़बूल   गिर के सज्दे में दुआ़ मांगो, हो रह़मत का नुज़ूल

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

﴾3﴿ खाना मिल गया

ह़ज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ एक बार जंगल में थे कि अचानक एक शख़्स मिला जिसे देख कर आप अपने दिल में ना पसन्दीदगी मह़सूस करने लगे, वोह शख़्स कहने लगा : "मैं नसरानी राहिब (या'नी क्रिस्चेन तारिकुद्दुन्या) हूं और "रूम" से आप की सोह़बत में रहने के लिये ह़ाज़िर हुवा हूं।" आप को दिल में पैदा होने वाली ना पसन्दीदगी की कैफ़िय्यत का राज़ मा'लूम हो गया। आप ने राहिब से फ़रमाया : मेरे पास खाने पीने की कोई चीज़ नहीं, कहीं ऐसा न हो तुम तक्लीफ़ में आ जाओ। वोह कहने लगा : या सय्यिदी ! (या'नी ऐ मेरे सरदार) दुन्या में आप के नाम का डंका बज रहा है और आप अभी तक खाने पीने की फ़िक्र में लगे हुए हैं ! येह सुन कर आप ने उस को सोह़बत में रहने की इजाज़त दे दी। सात

दिन रात बिग़ैर खाए पिये गुज़र गए। वोह घबरा गया और कहने लगा : अब मुआ़मला मेरी बरदाश्त से बाहर हो चुका है, खाने पीने का कोई इन्तिज़ाम फ़रमा दीजिये। ह़ज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने **सज्दा** किया और बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ की : "**या अल्लाह** पाक इस ग़ैर मुस्लिम ने मेरे बारे में हुस्ने ज़न (या'नी अच्छा गुमान) क़ाइम किया है, मेरी लाज तेरे हाथ में है, मुझे इस ग़ैर मुस्लिम के सामने रुस्वा न करना।" दुआ़ मांग कर जब **सज्दे** से सर उठाया तो एक थाल मौजूद था जिस में दो रोटियां और पानी के दो बरतन रखे हुए थे। खा पी कर दोनों वहां से चल पड़े।

मज़ीद सात रोज़ गुज़रने के बा'द कहीं रुके तो उस राहिब ने **सज्दे** में जा कर दुआ़ मांगी। देखते ही देखते एक त़श्त (या'नी थाल) नुमूदार (या'नी ज़ाहिर) हुवा जिस पर चार रोटियां और चार बरतनों में पानी मौजूद था। आप ह़ैरत में पड़ गए! अपना येह ज़ेह्न बनाया कि इस में से कुछ नहीं खाऊंगा क्यूं कि येह खाना एक ग़ैर मुस्लिम के लिये आया है। वोह कहने लगा : हुज़ूर ! खाइये ! और दो बातों की ख़ुश ख़बरी भी सुनिये एक तो मैं इस्लाम क़बूल करता हूं, येह कह कर उस ने कलिमए शहादत पढ़ा। दूसरी येह कि **अल्लाह** करीम के यहां आप का बहुत बड़ा मक़ाम है, मैं ने **सज्दे** में सर रख कर येह दुआ़ मांगी थी : "**या अल्लाह !** मुह़म्मदे मुस्त़फ़ा (صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) अगर रसूले बरह़क़ हैं तो मुझे दो रोटियां और दो गिलास पानी अ़त़ा फ़रमा और अगर **इब्राहीम** ख़व्वास तेरे वली हैं तो मज़ीद दो रोटियां और दो गिलास पानी अ़त़ा फ़रमा।" दुआ़ मांग कर मैं ने जूं ही **सज्दे** से सर उठाया तो खाने का येह त़श्त (या'नी थाल) मौजूद था। ह़ज़रते इब्राहीम ख़व्वास رَحْمَۃُاللہِ عَلَیْہ ने येह सुनने के बा'द खाना तनावुल फ़रमा (या'नी खा) लिया। और اَلْحَمْدُ لِلّٰہ वोह नौ मुस्लिम (या'नी नया मुसल्मान) विलायत के

आ'ला दरजे पर फ़ाइज़ हुवा। (फ़ैज़ाने सुन्नत, 1/799, मुलख़्ख़सन, كشف المحجوب، ص239)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। امین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

ख़ूब सज्दे में ऐ भाई ! गिड़गिड़ा कर कर दुआ़ काम बन जाएगा तेरा अज़ तुफ़ैले मुस्त़फ़ा

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰہُ علٰی مُحَمَّد

﴾4﴿ ह़ज़रते शिबली ने सज्दे में दुआ़ मांगी (वाक़िआ़)

ह़ज़रते (शैख़ अबू बक्र) शिबली (बग़दादी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ) ने एक दुन्या में फंसे (या'नी दुन्यादार) आदमी को देखा तो **सज्दे** में गिर गए और आप ने येह दुआ़ पढ़ी : "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ الَّذِیۡ عَافَانِیۡ مِمَّا ابۡتَلَاكَ بِہٖ وَفَضَّلَنِیۡ عَلٰی کَثِیۡرٍ مِّمَّنۡ خَلَقَ تَفۡضِیۡلًا۔" (या'नी : **अल्लाह** पाक का शुक्र है जिस ने मुझे इस मुसीबत से आ़फ़िय्यत दी जिस में तुझे मुब्तला किया और मुझे अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फ़ज़ीलत दी)

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/389)

अल्लाहु रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। امین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلّی اللّٰہُ علیہِ واٰلہٖ وسلّم

हर दीनी व दुन्यवी मुसीबत ज़दा को देख कर येह दुआ़ पढ़िये

येह वाक़िआ़ नक़्ल करने के बा'द ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ लिखते हैं : येह दुआ़ हर दीनी व दुन्यावी मुसीबत ज़दा को देख कर पढ़ी जाए तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ पढ़ने वाला उस मुसीबत से दूर रहेगा। (मिरआतुल मनाजीह़, 2/389) येह दुआ़ तिरमिज़ी शरीफ़ की ह़दीस नम्बर 3443 में बयान की गई है। मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہ इस ह़दीसे पाक के तह़त फ़रमाते हैं : बला ख़्वाह **जिस्मानी** हो जैसे कोढ़, अन्धा पन या और कोई बीमारी, या माली जैसे क़र्ज़, फ़क़्र, तंगिये रिज़्क़

वग़ैरा, या दीनी जैसे कुफ़्र, फ़िस्क़, ज़ुल्म, (बुरी) बिद्अ़त वग़ैरा ग़रज़ कि हर मुसीबत के लिये येह दुआ़ इक्सीर है । (مرقات، 5/283، تحت الحدیث:2429) येह दुआ़ बहुत आहिस्ता कहे कि वोह मुसीबत ज़दा न सुने, उसे रन्ज होगा । (لمعات التنقیح، 3/610, मिरआतुल मनाजीह़, 4/38)

तीन बीमारियों को ना पसन्द मत समझो

तीन क़िस्म की बीमारियों ﴾1﴿ ज़ुकाम ﴾2﴿ खुजली और ﴾3﴿ आशोबे चश्म (या'नी आंखें दुखने) में मुब्तला को देख कर येह दुआ़ न पढ़ी जाए । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 70 मुलख़्ख़सन) इन बीमारियों के फ़वाइद बयान करते हुए आ'ला ह़ज़रत फ़रमाते हैं : ह़ुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से ह़दीस है कि तीन बीमारियों को मक्रूह न रखो (या'नी बुरा न समझो) । ﴾1﴿ **ज़ुकाम :** कि इस की वज्ह से बहुत सी बीमारियों की जड़ कट जाती है ﴾2﴿ **खुजली :** कि इस से अमराज़े जिल्दिया (Skin diseases) जुज़ाम (या'नी कोढ़) वग़ैरा का इन्सिदाद हो जाता है (या'नी रास्ता रुक जाता है) । ﴾3﴿ **आशोबे चश्म :** ना बीनाई (या'नी अन्धे पन) को दफ़्अ़ करता है । (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 70 मुलख़्ख़सन)

हर बुराई से तू बचा या रब! दे दे अमराज़ से शिफ़ा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ علٰى مُحَمَّد

सज्दों की कसरत बुलन्दिये दरजात

ताबेई बुज़ुर्ग ह़ज़रते मा'दान बिन अबू त़ल्ह़ा رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मैं सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللهُ عَنْه से मिला, मैं ने अ़र्ज़ की : मुझे ऐसा अ़मल बताइये जिसे मैं करूं तो उस की बरकत से **अल्लाह** पाक मुझे जन्नत में दाख़िल कर दे, या (मैं ने येह कहा कि) मुझे **अल्लाह** पाक का

सब से पसन्दीदा अ़मल बताइये। ह़ज़रते सौबान رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ ख़ामोश रहे। मैं ने फिर पूछा, आप ख़ामोश रहे। मैं ने जब तीसरी बार पूछा, तो फ़रमाया : मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बारे में सुवाल किया था, आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया था, "कसरत से **सज्दे** किया करो क्यूं कि तुम जब भी **अल्लाह** पाक के लिये **सज्दा** करोगे, **अल्लाह** पाक तुम्हारा एक दरजा बुलन्द फ़रमा देगा और उस के बदले तुम्हारी एक ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा देगा।" (مسلم، ص199، حدیث:1093) एक रिवायत में येह भी है कि **अल्लाह** पाक इस के सबब **सज्दा** करने वाले के लिये एक नेकी लिखता है। (ابن ماجہ، 2/182، حدیث:1424)

अदाए सुन्नत का जज़्बा

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ पहली ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से इस बारे में सुवाल किया था) के तह़त फ़रमाते हैं : या'नी मैं ने भी हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से तीन बार येह सुवाल किया था, दो बार सरकार (صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم) ख़ामोश रहे थे और तीसरी बार में जवाब दिया था। (مرقات، 2/616) इसी सुन्नत पर अ़मल करते हुए मैं भी दो बार ख़ामोश रहा। हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की येह ख़ामोशी साइल (या'नी पूछने वाले) का शौक़ बढ़ाने के लिये और ह़ज़रते सौबान (رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ) की ख़ामोशी इसी सुन्नत पर अ़मल के लिये है, सह़ाबए किराम हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की अदाओं की नक़्ल करते थे। मुफ़्ती साह़िब ह़दीसे पाक के इस ह़िस्से (कसरत से सज्दे किया करो) के तह़त फ़रमाते हैं : इस त़रह़ कि नवाफ़िल ज़ियादा पढ़ो और तिलावते क़ुरआने करीम कसरत से करो, सज्दए शुक्र ज़ियादा करो। इस ह़िस्सए ह़दीस (इस के बदले तुम्हारी एक ख़त़ा मुआ़फ़ फ़रमा देगा) के तह़त फ़रमाते हैं : इस से मा'लूम हुवा कि सज्दा गुनाहों का कफ़्फ़ारा है मगर गुनाहों से मुराद हुक़ूक़ुल्लाह के गुनाहे सग़ीरा

(या'नी छोटे गुनाह) हैं, हुक़ूक़ुल इबाद (या'नी बन्दों के हुक़ूक़) अदा करने से और गुनाहे कबीरा (या'नी बड़े गुनाह) तौबा से मुआ़फ़ होते हैं।

(मिरआतुल मनाजीह़, 2/85)

दरजा बुलन्द होने और नेकियां लिखे जाने में फ़र्क़

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मुनावी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक सुवाल क़ाइम करते हुए फ़रमाते हैं कि दरजा बुलन्द होने और नेकियां लिखने में क्या फ़र्क़ है ? ह़ालां कि नेकियां लिखे जाने के सबब ही दरजा बुलन्द होता है। फिर इस का जवाब देते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : दरजा अगर्चे नेकियां लिखने के सबब ही बुलन्द होता है लेकिन सबब अलग होता है और मुसब्बब (या'नी सबब का नतीजा) अलग, लिहाज़ा येह दो चीज़ें हुईं, नीज़ कभी ऐसा भी होता है नेकियां लिखने के सबब दरजा बुलन्द नहीं होता बल्कि कोई दूसरा गुनाह मिटा दिया जाता है। (فیض القدیر، 5/621)

आ'ज़ाए सुजूद जहन्नम की आग से मह़फ़ूज़ रहेंगे

ह़ज़रते अबू हुरैरा رَضِیَ اللهُ عَنْه से रिवायत है, ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : सज्दे के निशान के सिवा इन्सान के सारे जिस्म को आग जलाएगी। **अल्लाह** पाक ने जहन्नम पर ह़राम कर दिया है कि वोह सज्दे के निशान को जलाए। (مسلم، ص96، حدیث:451)

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इस ह़दीसे पाक के तह़्त लिखते हैं : या'नी दोज़ख़ की आग उन लोगों (या'नी जो मुसल्मान जहन्नम में जाएंगे) के सारे आ'ज़ा को जला देगी मगर उस की पेशानी को न जला सकेगी, बा'ज़ शारेह़ीन ने फ़रमाया कि : सज्दे के सातों उ़ज़्व (या'नी पेशानी, दोनों हाथ, दोनों घुटने और दोनों पांव) मह़फ़ूज़ रहेंगे। (اشعۃ اللمعات، 4/418) बा'ज़ शारेह़ीन ने फ़रमाया कि इस से मुराद पूरा चेहरा है, इस क़ौल की

ताईद "बुख़ारी शरीफ़" की इस ह़दीस "وَيُحَرِّمُ اللّٰهُ صُوَرَهُمْ عَلَى النَّارِ" (بخاری، 4/554، حدیث:7439) (या'नी **अल्लाह** पाक उन की सूरतें आग पर ह़राम फ़रमा देगा) से होती है। (मिरआतुल मनाजीह़, 7/437 मुलख़्ख़सन)

बुलन्द मर्तबे नफ़्स की मुख़ालफ़त से मिलते हैं

ह़ज़रते शैख़ अ़ब्दुल ह़क़ मुह़द्दिसे देह्लवी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक के ह़िस्से (अपने नफ़्स पर सज्दों की कसरत से मेरी मदद कर) के तह़्त फ़रमाते हैं : येह फ़रमान ऐसे ही है जैसे त़बीब मरीज़ से कहता है : मैं तुम्हारा इलाज ऐसी दवा के साथ करूंगा जिस से तुम्हें शिफ़ा ह़ासिल हो जाएगी लेकिन तुम परहेज़ और मेरी बातों पर अ़मल कर के मेरी मदद (या'नी मेरे साथ तआ़वुन) करो और सरकार صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के "अपने नफ़्स पर" फ़रमाने में इस बात पर तम्बीह (या'नी ख़बरदार करना) है कि बुलन्द मरातिब (या'नी ऊंचे मर्तबे) सिर्फ़ नफ़्स की मुख़ालफ़त के ज़रीए ह़ासिल होते हैं। (لمعات التنقیح، 3/173)

इस ह़दीसे पाक से येह भी मा'लूम हुवा कि बुज़ुर्गों की ख़िदमत करना और जिस काम में उन की ख़ुशी हो उसे पूरा करना दर ह़क़ीक़त फ़ज़ीलतो सआ़दत ह़ासिल करने का ज़रीआ़ है, ख़ास त़ौर पर सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ा (या'नी ख़ुशी) को मद्दे नज़र रखना तो दीनो दुन्या की सब से बड़ी सआ़दत और भलाई है।

(अशि'अ़तुल्लम्आ़त (उर्दू), 2/247 मुलख़्ख़सन)

ख़ुश ख़बरी सुन कर सज्दए शुक्र करना सुन्नते मुस्तह़ब्बा है

ऐ आ़शिक़ाने नमाज़ ! जब कभी ख़ुशी की ख़बर मिले, दो रक्अ़त नमाज़े शुक्राना अदा करना या **सज्दए शुक्र** कर लेना चाहिये। "दीनी या दुन्यवी ख़ुशी की ख़बर सुन कर सज्दे में गिर जाना **सज्दए शुक्र**

कहलाता है ।''(मिरआतुल मनाजीह़, 2/388) **ह़ज़रते** अबू बक्रह رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ रिवायत करते हैं कि जब **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को कोई ख़ुशी की ख़बर पहुंचती या आप ख़ुश होते तो **अल्लाह** पाक का शुक्र करते हुए सज्दा फ़रमाते । (ابوداؤد، 3/117، حدیث:2774) ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ फ़रमाते हैं : सज्दए शुक्र अदा करना सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم और सह़ाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُم से साबित है । (मिरआतुल मनाजीह़, 2/389, माख़ूज़न) क्या हम ने भी कभी किसी ख़ुशी के मौक़अ़ पर सज्दए शुक्र अदा किया है ? ''**मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत**'' से दो **अ़र्ज़ व इर्शाद** मुलाह़ज़ा हों, **अ़र्ज़ :** सज्दए शुक्र मस्नून है या मुस्तह़ब ? **इर्शाद : सुन्नते मुस्तह़ब्बा** है । जिस वक़्त अबू जह्ल लईन का सर कट कर सरकार में आया (या'नी ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास लाया गया) तो **सज्दए शुक्र** फ़रमाया । **अ़र्ज़ :** सज्दए शुक्र की निय्यत नमाज़ के सज्दे में कर ली तो कुछ ह़रज तो नहीं ? **इर्शाद :** कोई ह़रज नहीं और बेहतर येह कि **नमाज़** से अ़लाह़िदा करे ।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 146, 379)

''**बहारे शरीअ़त**'' में है : ''सज्दए शुक्र मसलन औलाद पैदा हुई या माल पाया या गुमी हुई चीज़ मिल गई या मरीज़ ने शिफ़ा पाई या मुसाफ़िर वापस आया ग़रज़ किसी ने'मत पर सज्दा करना मुस्तह़ब है ।'' (बहारे शरीअ़त, 1/738,739) **अल्लाह** करीम हमें भी ख़ुश ख़बरी सुनने पर **सज्दए शुक्र** अदा करने की तौफ़ीक़ अ़ता फ़रमाए । **अल्लाह** पाक के करम से अगर आप को येह ख़ुश ख़बरी मिले कि आप का ह़ज या उ़म्रह व मदीनए मुनव्वरह की ह़ाज़िरी का वीज़ा लग गया है तो इस पर आप को **सज्दए शुक्र** करना चाहिये ।

ऐ काश ! कोई आ कर, कह दे मेरे कानों में   चल ! तुझ को मदीने में सरकार बुलाते हैं

सज्दए शुक्र का त़रीक़ा

सज्दए शुक्र (व **सज्दए** तिलावत) दोनों का एक ही त़रीक़ा है। मक्तबतुल मदीना की 1250 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" जिल्द अव्वल सफ़ह़ा 731 पर है : (तिलावत और शुक्र के) सज्दे का मस्नून त़रीक़ा येह है कि (बा वुज़ू) खड़ा हो कर اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहता हुवा सज्दे में जाए और कम से कम तीन बार سُبْحٰنَ رَبِّیَ الْاَعْلٰی कहे, फिर اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहता हुवा खड़ा हो जाए, पहले पीछे दोनों बार اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहना सुन्नत है और खड़े हो कर सज्दे में जाना और सज्दे के बा'द खड़ा होना येह दोनों क़ियाम मुस्तह़ब। (बहारे शरीअ़त, 1/731) **सज्दए तिलावत** (और सज्दए शुक्र) के लिये اَللّٰہُ اَکْبَرُ कहते वक़्त न हाथ उठाना है और न इस में तशह्हुद है न सलाम। (बहारे शरीअ़त, 1/733)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सज्दे में पेशानी को नुक़्सान पहुंचा

ह़ज़रते अबू इस्माईल मुर्रह رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ रोज़ाना एक हज़ार नवाफ़िल अदा फ़रमाया करते थे और जब उ़म्र रसीदा हो गए तो 400 नवाफ़िल पढ़ते थे। (البدایۃ والنہایۃ، 5/565) ह़ारिस ग़नवी कहते हैं कि "एक बार आप ने इतना त़वील सज्दा किया ह़त्ता कि मिट्टी ने पेशानी को नुक़्सान पहुंचाया।" 76 हिजरी में आप का इन्तिक़ाल हुवा।

(تہذیب التہذیب، 8/107, रह़मत भरी ह़िकायात, स. 47 ता 48)

नूरानी पेशानी

ह़ज़रते अबू इस्माईल رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ का जब इन्तिक़ाल हुवा तो अहले ख़ाना में से किसी ने आप को ख़्वाब में इस ह़ाल में देखा गोया कि आप के सज्दे की जगह चमक्दार सितारे की मानिन्द रोशन है, तो अ़र्ज़ की : येह

आप के चेहरे पर क्या है ? उन्हों ने फ़रमाया : "मेरी पेशानी को मिट्टी के नुक़्सान पहुंचाने की वज्ह से नूरानी कर दिया गया है।" अ़र्ज़ की : आख़िरत में आप को क्या मक़ाम ह़ासिल हुवा ? फ़रमाया : "बेहतरीन घर है, जिस के अह्ल (या'नी रहने वाले) यहां से मुन्तक़िल (Transfer) होते हैं न ही इन्हें मौत आती है।" (موسوعہ لابن ابی دنیا، 3/58، رقم:56)

रह़मत भरी ह़िकायत

येह भी मन्क़ूल है कि इन्तिक़ाल के बा'द किसी ने ह़ज़रते अबू इस्माईल رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को ख़्वाब में देखा कि आप के सज्दे की जगह नूर बन गई है तो पूछा : आप कहां हैं ? जवाब दिया : "मैं ऐसे घर में हूं जिस के अह्ल (या'नी रहने वाले) यहां से कूच करें (या'नी निकलें)गे न इन्हें मौत आएगी।" (البدایۃ والنہایۃ، 5/565) **अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो।** امین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّن صلَّی اللّٰہُ علیہِ والہٖ وسلَّم

बग़ैर कुछ बिछाए सज्दा करना अफ़्ज़ल है

"**एह़याउल उ़लूम**" में है : "(ताबेई बुज़ुर्ग) ह़ज़रते उ़मर बिन अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की आ़दते करीमा थी कि हमेशा **सज्दा** ज़मीन ही पर करते, सज्दे की जगह मुसल्ला वग़ैरा न बिछाते।" (احیاء العلوم، 1/204, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 1/466) और "**बहारे शरीअ़त**" में भी बिला ह़ाइल (या'नी बिग़ैर कुछ बिछाए) **सज्दा** करना मुस्तह़ब लिखा है (देखिये बहारे शरीअ़त, 1/538) ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "**अल्लाह पाक** के नज़्दीक बन्दे की येह ह़ालत सब से ज़ियादा पसन्दीदा है कि उसे **सज्दा** करते देखे कि मुंह ख़ाक पर रगड़ रहा है।" (معجم اوسط، 4/308، حدیث:6075)

गर्द आलूद पेशानी की फ़ज़ीलत

जब तक नमाज़ी के माथे पर **सज्दे** के दौरान लगी हुई मिट्टी बाक़ी रहती है, फ़िरिश्ते मग़्फ़िरत की दुआ़ मांगते रहते हैं, जैसा कि शहन्शाहे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "तुम में से कोई शख़्स जब तक **नमाज़** से फ़ारिग़ न हो जाए अपनी पेशानी (की मिट्टी) को साफ़ न करे क्यूं कि जब तक उस की पेशानी पर **नमाज़** के **सज्दे** का निशान रहता है फ़िरिश्ते उस के लिये दुआ़ए मग़्फ़िरत करते रहते हैं।" (معجم كبير، 22/56، حديث:134)

(दौराने नमाज़) **पेशानी** से ख़ाक या घास छुड़ाना मकरूहे (तन्ज़ीही) है, जब कि इन की वज्ह से **नमाज़** में तश्वीश न हो और **तकब्बुर** मक़्सूद हो तो कराहते तह़रीमी (ना जाइज़ व गुनाह) है और अगर तक्लीफ़ देह हों या ख़याल बटता हो तो (छुड़ाने में) ह़रज नहीं और **नमाज़** के बा'द छुड़ाने में तो मुत़्लक़न मुज़ायक़ा नहीं बल्कि (छुड़ा लेना) चाहिये, ताकि रिया न आने पाए। (बहारे शरीअ़त, 1/631, فتاوىٰ هنديه، 1/105)

चेहरे पर सज्दे का निशान

ह़ज़रते इमाम फ़ख़्रुद्दीन मुह़म्मद बिन उ़मर राज़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه पारह 26 **सूरतुल फ़त्ह़** की आयत नम्बर 29, "﴿سِيْمَاهُمْ فِيْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ اَثَرِ السُّجُوْدِ﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** इन की अ़लामत इन के चेहरों में है सज्दों के निशान से।)" की तफ़्सीर में फ़रमाते हैं : इस में दो क़ौल हैं : **एक क़ौल** येह है कि येह सज्दे का निशान (दुन्या में नहीं बल्कि) बरोज़े क़ियामत होगा, चुनान्चे **अल्लाह** करीम इर्शाद फ़रमाता है : ﴿يَّوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** जिस दिन कुछ मुंह उन्जाले (या'नी रोशन) होंगे (پ٤، اٰلِ عمرٰن:١٠٦)) नीज़ इर्शाद फ़रमाता है : ﴿نُوْرُهُمْ يَسْعٰى﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** उन

का नूर दौड़ता होगा (پ28،التحریم:8)) और उन के चेहरों में नूर, **अल्लाह** पाक की जानिब तवज्जोह करने की वज्ह से होगा जैसा कि ह़ज़रते इब्राहीम ख़लीलुल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام ने कहा था : ﴿اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ﴾ (**तरजमए कन्ज़ुल ईमान :** मैं ने अपना मुंह उस की त़रफ़ किया जिस ने आस्मान व ज़मीन बनाए। (پ۷،الانعام:۷۹)) और जो शख़्स सूरज की सीध में खड़ा होता है तो सूरज की शुआ़एं (Rays) उस के चेहरे पर पड़ती हैं जिस की वज्ह से उस के चेहरे पर ख़ूब नूर (या'नी उजाला) ज़ाहिर होता है ह़ालां कि सूरज का नूर (या'नी उजाला) आ़रिज़ी (Temporary) होता है जो ख़त्म हो जाता है, जब कि **अल्लाह** करीम आस्मानों और ज़मीन को मुनव्वर या'नी रोशन करने वाला है, तो जो शख़्स उस की जानिब मुतवज्जेह होगा उस के चेहरे पर ऐसा नूर ज़ाहिर होगा जो अन्वार (या'नी रोशनियों) से भरा होगा। **दूसरा क़ौल** येह है कि येह सज्दे का निशान दुन्या में होगा, फिर इस में मज़ीद दो क़ौल हैं : **एक क़ौल** येह है कि इस से मुराद वोह निशान (या'नी काला धब्बा, दाग़) है जो कस्रते सुजूद (या'नी ज़ियादा सज्दे करने) के सबब पेशानी पर ज़ाहिर होता है। **दूसरा क़ौल** येह है कि इस से मुराद वोह हुस्न है जिसे **अल्लाह** पाक रात में सज्दे करने वालों के चेहरों पर दिन में ज़ाहिर फ़रमाता है और अ़क़्ल मन्दों के लिये येह बात बिल्कुल साबित शुदा है कि दो शख़्स रात जागते हैं, एक शख़्स रात शराब पीने और लह्वो लइ़ब (या'नी खेलकूद) में मश्ग़ूल रह कर गुज़ारता है और दूसरा **नमाज़,** क़िराअत व इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने में गुज़ारता है तो दूसरे दिन हर शख़्स शराब और खेलकूद में रात गुज़ारने वाले और ज़िक्रो शुक्र में रात बसर करने वाले के दरमियान फ़र्क़ कर लेता है। (تفسیر کبیر،10/89)

पेशानी के धब्बे के मुतअ़ल्लिक़ आ'ला ह़ज़रत का ''अक़ूल''

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ''फ़तावा अफ़्रीक़ा'' में सज्दे के निशान के मुतअ़ल्लिक़ त़वील बह़्स करने के बा'द सफ़्ह़ा 66 पर लिखते हैं : **अक़ूल** (या'नी मैं कहता हूं) : इस बारे में तह़क़ीक़ हुक्म येह है कि दिखावे के लिये क़स्दन (या'नी जान बूझ कर) येह निशान पैदा करना ह़रामे क़त़ई व गुनाहे कबीरा है और वोह निशान مَعَاذَ الله उस के इस्तिह़्क़ाक़े जहन्नम (या'नी दोज़ख़ की ह़क़दारी) का निशान है जब तक तौबा न करे। और अगर येह निशान कस्रते सुजूद (या'नी ज़ियादा सज्दों) से ख़ुद पड़ गया तो वोह सज्दे अगर रियाई (या'नी दिखावे के लिये) थे तो फ़ाइल जहन्नमी और येह निशान अगर्चे ख़ुद जुर्म नहीं मगर जुर्म से पैदा हुवा। लिहाज़ा इसी नारियत (या'नी दोज़ख़ी होने) की निशानी। और अगर वोह सज्दे ख़ालिसन लि वज्हिल्लाह (या'नी ख़ालिस **अल्लाह** पाक के लिये) थे मगर येह निशान पड़ने से ख़ुश हुवा कि लोग मुझे आ़बिद साजिद (इ़बादत करने वाला सज्दा गुज़ार) जानेंगे तो अब रिया आ गया और येह निशान उस के ह़क़ में मज़्मूम (या'नी क़ाबिले मज़म्मत) हो गया। और अगर उसे इस की त़रफ़ कुछ इल्तिफ़ात (ध्यान) नहीं तो येह निशान निशाने मह़मूद (लाइक़े ता'रीफ़ निशान) है। और एक जमाअ़त के नज़्दीक आयए करीमा में इस की ता'रीफ़ मौजूद है। उम्मीद है कि क़ब्र में मलाएका के लिये उस के ईमान व नमाज़ की निशानी हो और रोज़े क़ियामत येह निशान आफ़्ताब से ज़ियादा नूरानी हो। (फ़तावा अफ़्रीक़ा, स. 66)

तहज्जुद गुज़ार का चेहरा नूरानी हो जाता है

ह़ज़रते ह़सन बसरी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से पूछा गया कि क्या वज्ह है

तहज्जुद पढ़ने वालों के चेहरे ह़सीन (या'नी नूरानी) होते हैं ? आप ने फ़रमाया : "इस लिये कि वोह अपने पाक परवर्दगार के लिये तन्हाई इख़्तियार करते हैं तो **अल्लाह** पाक उन को अपने नूर का लिबास पहना देता है।" (احیاء العلوم، 5/147, एह़याउल उ़लूम (उर्दू), 5/374)

नेकी दिल का नूर और चेहरे की चमक

एक बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : नेकी करने से दिल में नूर, चेहरे में चमक, रिज़्क़ में फ़राख़ी (या'नी कुशादगी, ज़ियादती) और लोगों के दिलों में उस के लिये मह़ब्बत पैदा हो जाती है। अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी رَضِیَ اللّٰہُ عَنْہ का इर्शाद है : एक शख़्स कोई काम छुप कर बड़ी राज़दारी से करता है, **अल्लाह** पाक उस के आसार उस के चेहरे और उस के कलाम (या'नी गुफ़्तगू) में नुमायां कर देता है। (تفسیر القرآن العظیم، 7/337)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ على مُحَمَّد

कराटे का खिलाड़ी मुबल्लिग़ कैसे बना ?

सज्दों की लज़्ज़तें पाने, तकब्बुर से जान छुड़ाने और ख़ुद को आ़जिज़ी का पैकर बनाने के लिये आ़शिक़ाने रसूल की दीनी तह़रीक, "दा'वते इस्लामी" के क़ाफ़िलों में सफ़र करते करवाते रहिये। **मदनी बहार :** एक इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के दीनी माह़ोल से वाबस्तगी से क़ब्ल बहुत ही बिगड़े हुए किरदार के मालिक थे। झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बद निगाही और लड़ाई झगड़ा इन के रोज़मर्रा के मा'मूलात में शामिल थे। इन्हों ने मार्शल आर्ट्स (या'नी कराटे वग़ैरा) सीखा हुवा था जिस के बलबूते पर लोगों से ख़्वाह म ख़्वाह झगड़ा मोल लेते। हर नए फ़ैशन को अपनाना

इन के मशाग़िल में शामिल था, अफ़्सोस ! नमाज़ों से इस क़दर दूरी थी कि इन्हें इतना भी पता न था कि कौन सी नमाज़ की कितनी रक्अ़तें होती हैं ! आख़िर कार इन की क़िस्मत का सितारा यूं चमका कि इन की मुलाक़ात अपने एक पुराने दोस्त से हुई जो दा'वते इस्लामी के दीनी माहोल से वाबस्ता हो चुके थे, उन्हों ने इन्फ़िरादी कोशिश करते हुए इन्हें क़ाफ़िले में सफ़र करने की दा'वत दी, उन की इन्फ़िरादी कोशिश काम्याब हुई और येह हाथों हाथ तीन दिन के क़ाफ़िले के मुसाफ़िर बन गए । क़ाफ़िले में आ़शिक़ाने रसूल की सोहबत की बरकत से इन्हें अपनी ज़िन्दगी का मक़्सद मा'लूम हुवा और येह अपने गुनाहों पर नादिम हुए कि ज़िन्दगी का बहुत बड़ा हिस्सा मैं ने ग़फ़्लत में गुज़ार दिया, इन्हें इस ह़द तक रिक़्क़त नसीब हुई कि जब भी बयान सुनते आंखों से आंसू जारी हो जाते ह़त्ता कि **क़ाफ़िले** से वापसी पर भी रोने लगे। اَلْحَمْدُ لِلّٰه उस दिन के बा'द से दा'वते इस्लामी का दामन इन के हाथों में रहा, येह डिवीज़न सत़्ह़ पर क़ाफ़िला ज़िम्मेदार की हैसिय्यत से दीनी कामों की धूमें मचाने में भी मसरूफ़े अ़मल रहे।

उल्फ़ते मुस्त़फ़ा और ख़ौफ़े ख़ुदा चाहिये गर तुम्हें क़ाफ़िले में चलो

(वसाइले बख़्शिश, स. 669)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ علٰى مُحَمَّد

या रब्बल मुस्त़फ़ा ! हमें फ़राइज़ के साथ साथ ख़ूब नवाफ़िल पढ़ने और कसरत के साथ सज्दे करने की सआ़दत इनायत फ़रमा।

फ़राइज़ पढ़ूं, ख़ूब नफ़्लें पढ़ूं मैं करम कर ख़ुदा ! ख़ूब सज्दे करूं मैं

(वसाइले बख़्शिश, स. 669)

اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللہُ علیہِ واٰلہٖ وسلَّم

अगले हफ़्ते का रिसाला

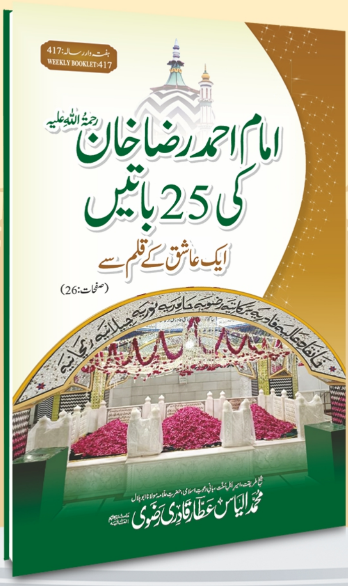

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025